Q गयासुद्दीन बलबन की जीवनी तथा कार्यों का उल्लेख करें ?

इल्बारी जाति के गयासुद्दीन बलबन ने एक नए राजवंश बलबनी राजवंश की स्थापना की। बलबन को ख्वाजा जमालुद्दीन बसरी नाम का एक व्यक्ति खरीद कर 1232-33 ई० में दिल्ली लाया गया। इल्तुतमिश ने ग्वालियर को जीतने के बाद बलबन को खरीद लिया। अपनी योग्यता और प्रतिभा के कारण वह जल्द ही पदोन्नित पाते हुए इल्तुतमिश के विश्वसनीय "चालीस दासों" के दल में शामिल हो गया और नासिरुद्दीन महमूद के शासन काल में 1246 में वह प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। 20 वर्ष बाद 1265 में नासिरुद्दीन की मृत्यु के बाद उसने सुल्तान का पद ग्रहण किया।

गद्दी पर बैठने के बाद बलबन ने राजमुकुट को उच्च एवं सम्मानित स्तर पर स्थापित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कार्य किए उसने इल्तुतमिश द्वारा स्थापित 40 तुर्की सरदारों के दल को समाप्त कर दिया। बंगाल की तात्कालीन राजधानी लखनौती उस समय विद्रोह का नगर था। इस विद्रोह को समाप्त किया साथ ही उसने मेवातियों एवं कटेहर में हुए विद्रोह का भी दमन किया तथा दोआब एवं पंजाब क्षेत्र में शांति स्थापित की।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत पर मंगोल आक्रमण के भय को समाप्त करने के लिए बलबन ने एक सुनिश्चित योजना का क्रियान्वयन किया। साथ ही उसने अयोग्य एवं वृद्ध सैनिकों को वेतन का भुगतान नगद वेतन में किया। अपने विरोधियों के प्रति बलबन ने कठोर लौह एवं रक्त नीति के अंतर्गत विद्रोही व्यक्तियों की हत्या कर उसकी स्त्री एवं बच्चों को दास बना लिया जाता था।

साथ ही बलबन की कुछ अन्य उपलब्धियाँ एवं कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है जो निम्न प्रकार से है:-

बलबन का राजत्व सिद्धांत :- बलबन दिल्ली सल्तन का पहला ऐसा सुल्तान था। जिसने अपने राजत्व सिद्धांत की विस्तार पूर्वक व्याख्या की। उसके राजत्व सिद्धांत के महत्व तथ्य थे - राजवंशज अर्थात राजा को राजवंश से संबंधित होना चाहिए। राजत्व को दैवी संस्था मानते हुए बलबन ने कहा की राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि

होता है अतः उसका स्थान केवल पैगम्बर के बाद है। ऐसी स्थिति में उसके द्वारा किए गए कार्य न्यायसंगत होता है। बलबन ने उच्च कुल एवं निम्न कुल के बीच अंतर स्थापित करने का महत्व दिया। बलबन के अनुसार राजत्व के लिए भव्य दरबार एवं दिखावटी मान-मर्यादा होना आवश्यक है। बलबन ने फारसी रीति-रिवाजों पर आधारित उनके नाम की तरह अपने पुत्रों का नाम - बैकुबाद, कैखुसरो आदि रखा। उसने ईश्वर, शासक तथा जनता के बीच पितृतीय संबंध को राजत्व का आधार बनाना चाहा। उसने राजा द्वारा निरंकुश एवं कठोर न्याय किए जाने को महत्व दिया और साथ कुरान के नियमों को शासन के महत्व को स्वीकारते हुए अपने द्वारा जारी किए गये सिक्कों पर खलीफा के नाम को अंकित कराया तथा उसके नाम से खुतबे भी पढ़े

बंगाल के विद्रोह का दमन :- 1279 ई० में बलबन को बंगाल में हुए विद्रोह का सामना करना पड़ा। बंगाल का गवर्नर तुगरिल ने विद्रोह कर दिया और अपने आप को लखनौती का सुल्तान घोषित किया। बलबन ने उसके विरुद्ध सेना भेजी लेकिन वह पराजित हो गई। बलबन ने पराजित सेनानायक को मृत्युदण्ड दिया और स्वयं सेना लेकर बंगाल की ओर बढ़ा। इस बार तुगरिल बेग पराजित हुआ तलवार से उसका सर काट दिया गया तथा उसके शरीर को नदी में फेंक दिया गया। तथा उसके अनुयायियों को गुलाम बना लिया गया। बलबन ने अपने पुत्र बुगरा खाँ को बंगाल का गवर्नर बना दिया। और स्वयं बंगाल छोड़कर जाने से पहले अपने पुत्र से कहा था कि - "मुझे समझ लो यदि सिंध मालवा या लखनौती के राज्यपालों ने दिल्ली शासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तलवार खींची तो उनके साथ भी वही होगा जो तुगरिल और उसके साथियों के साथ हुआ है।"

मेवातियों के उपद्रव की समाप्ति :- सम्राट पद की प्रतिष्ठा स्थापित करने और केन्द्रीय प्रशासन को संगठित करने के साथ बलबन ने आंतरिक विद्रोह को कुचलने की ओर ध्यान दिया। सबसे पहले उसने मेवातियों के उपद्रव को समाप्त करने का निश्चय किया। मेवाती डाकू राजधानी के समीपवर्ती क्षेत्रों में निवास-

करते थे। उनका आतंक इतना बढ़ गया था कि वे राजधानी में घुसकर लूटमार करने लगे थे। उनका निवास जंगलों के बीच होता था। इसलिए वे सुल्तान के सैनिकों के पहुँच से बाहर थे। प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए भी बलबन ने इसके विरुद्ध कार्यवाही की थी, परंतु उसे पूरी सफलता नहीं मिली थी। अब उसने इनके विरुद्ध अभियान पुनः आरंभ किया। मेवाती डाकुओं के इलाके को सेना द्वारा घेर कर जंगलों को काट दिया गया और सभी वयस्क पुरुषों को मार डाला गया। स्त्री एवं बच्चों को गुलाम बनाकर बेच दिया गया। उस क्षेत्र में सैनिक छावनियाँ कायम कर दी गई ताकि उस क्षेत्र में फिर कोई उपद्रव न हो।

मंगोलो पर विजय :- बलबन के समय में मंगोलो का भय बहुत बढ़ गया था। बलबन ने साल्टरेन्ज पर अपने अभियान का नेतृत्व किया। और खोखरों को दंडित किया। बलबन ने पश्चिम सीमाओं में पड़ने वाले सभी दुर्गों की मरम्मत करवाई और वहां पर पूर्ण प्रशिक्षित सेना की व्यवस्था की। नए दुर्ग तथा चौकियों का निर्माण करवाया। उसने मार्गों पर दुश्मनों के लिए कड़ी चौकसी रखी। शेरखाँ उस समय का प्रसिद्ध सैनिक योद्धा था। मंगोल लोग उससे काफी भयभीत रहा करते थे। ~~उसकी प्रसिद्ध से बलबन दुर~~

। एक दिन बलबन ने उसे विष दिलवाकर मरवा डाला।

इसका प्रभाव काफी बुरा हुआ - मंगोल खोखरों और अन्य जातियाँ फिर से बलबन पर आक्रमण करने लगीं। तब बलबन ने तैमूर खाँ को सुनाम का प्रबंधक बनाया। इसके बाद भी मंगोलो ने 1285 ई० में बलबन पर आक्रमण किया, जिसमें मंगोलो की हार हुई। सन् 1286 ई० में मंगोल फिर सामने आए और राजकुमार मोहम्मद की हत्या कर दी। बलबन ने लाहौर को पुनः जीता परन्तु उसकी शक्ति आगे न बढ़ सकी। व्यास नदी से आगे के प्रदेश मंगोलो के ही नियंत्रण में रहे।

चालीसा दल का संहार :- चालीसियों के संहार का सारा श्रेय बलबन को प्राप्त है। इन चालीसियों ने शासन के प्रत्येक अंग को अपने अधिकार में कर लिया था।